स्नातकोत्तर मैथिली विभाग
पटना विश्वविद्यालय

द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र - सी० सी० - 5

प्रो० सत्य नारायण मेहता

कवीश्वर चन्दा झा

मैथिली साहित्यक इतिहासमे कवीश्वर चन्दा झाक अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान अछि। हिनक जन्म 1830 आ मृत्यु 1907 ई०मे भेल छलनि। कवीश्वर चन्दा झा एक गोट विशिष्ट बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार छलाह। विद्यापतिक पश्चात् मैथिली काव्य संसारक नवीन कायाकल्प करनिहार इएह छिकाह। ई संस्कृत विद्वानक संगहि कवि, रामायणकार, गद्यकार एवं अनुसंधान कर्त्ता छलाह। एक समय छल जखन काव्य जगतमे अवरोध उपस्थित भए गेल छल, अर्थात ओहि समयमे काव्यक रचना पाण्डित्यपूर्ण होएबाक कारणेँ वर्जित भए गेल छल। जनसाधारण अथवा अल्पशिक्षित वर्ग लोकनि ओहि संस्कृत रचनाक आस्वादन नहि कए पबैत छलाह, तखन कवीश्वर जन-साधारण हेतु मनोरंजक एवं मानवीय संवेदना परक काव्यक रचना प्रारम्भ कएलनि। मैथिली साहित्यक क्षितिज पर कवीश्वर चन्दा झाक उदय एक गोट वरदान प्रमाणित भेल जाहिसँ मैथिली साहित्यमे नवजीवन संचारित भए उठल। इएह कारण अछि जे समस्त मैथिली के विद्वान लोकनि हिनका ~~[illegible]~~ आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक मानैत छथि।

कवीश्वर चन्दा झा द्वारा रचित रचनाक संख्या सोलह कहल जाइत अछि, जाहिमे प्रमुख अछि — लक्ष्मीश्वर-विलास, मिथिला भाषा रामायण, पुरुष परीक्षाक अनुवाद, चन्द्रपद्यावली, महेशवाणी संग्रह, गीति-सुधा, रसकौमुदी, अहिल्या चरित नाटक, वातालाप काव्य, मूलग्राम विचार आदि।

कवीश्वर चन्दा झाक काविक रूप अत्यन्त प्रशंसनीय अछि। ई तत्कालीन सामाजिक स्थितिक अनुभवक आधार पर देशाक तत्कालीन परिस्थिति, अर्थक हानि, मानवक सुख-दुःख, प्रकृति विषयक प्रति अपन अनुभवकेँ काव्यक माध्यमसँ अभिव्यक्त कएने छथि। हुनक एक गोट 'तिरहुति प्रशंसा' शीर्षक काव्यक अवलोकन कएल जाय —

जानकीक जन्मभूमि नाम तिरहुति, अनेक दर्शनक विराजमसँ विभूति।
विवेक आत्म तत्व निष्ठ योग योग्य युक्ति, विधाता के हाउ आब की रहैब युक्ति॥

Scanned by CamScanner

एहिना एक गोट अन्य कविता जकर शीर्षक अछि- 'कचहरी'। एहिमे कवि वर्त्तमान समाजक 'कचहरी'क विकृत स्वरूपक परिचय देने छथि। कवि कहैत छथि जे आइ कचहरीमे विरले व्यक्ति भेटताह जे सत्य भाषण करैत होथि आ हुनका सभक एक मात्र उद्देश्य रहैत छनि जे कोना होसए लोकक धन अपहरण कए ली। सभक मनमे छल-कपट भरल रहैत अछि। एही प्रकारक भाव निम्न कवितामे देखल जाय —

न्यायक भवन कचहरी नाम। सब अन्याय भरल तेहि ठाम।
सत्य वचन विरले जन भाष। सभ मन धनक हरण अभिलाष॥
कपट भरल कत कौटिक कोटि। ककर न कर मर्यादा छोटि।
कवि मन चन्द कचहरी घूस। सभ सहमत ककरा के दूस॥

कवीश्वर देश-दशा सम्बन्धी काव्यमे कहैत छथि जे समस्त लोकमे अधर्मक विभीषिका छाएल अछि तैं लोक नित्य अधार्मिक आचरणमे लागल रहैत अछि। मरीचक भावमे जे अन्न भेटैत अछि से बिकु जनेर तथा उपायहीन लोकके ठोढ़ सुखाए गेल अछि। एहि संसारमे दुइए गोटे विशेष खुश छथि। ई दुनू छथि दुष्ट चोर आ भिखारी। एही प्रकारक भाव निम्न कवितामे देखल जा संकेत अछि —

अचार योग्य आम ने कोंढ़ा सँ हो अगोट
समस्त लोकमे अधर्म कर्म नित्य छोट
मरीच भाव अन्न भेट से जनेर गोट
उपायहीन लोक कें सुखाय गेल ठोढ़।
सुखी देखै छी दुइ गोट चोर ओ भिखारि
बढ़ल खर्च बाढ़ि बन्धु बन्धु बीच मारि
नवीन व्याधि व्याधिसँ समस्त स्वास्थ्य हरि
अनाथ दैव सृष्टि देखु दृष्टि कें उघारि॥

एहि प्रकारें चन्द्रपद्यावलीमे संकलित अनेक गीत सभ एहि तथ्यक प्रमाण अछि जे कवीश्वर चन्दा झा विषय-वस्तुक दृष्टिसँ आधुनिक मैथिली कविताकें जन-जीवन सँ जोड़ने छथि।

एकर अतिरिक्त कवीश्वर महादेव एवं पार्वती विषयक महेशवाणी एवं नचारीक रचना कएने छथि। एहन पद सभ सेहो कवीश्वरक अद्भुत भक्त हृदयक परिचायक अछि। निम्न पाँति मे महादेवक पारिवारिक जीवनक वर्णन देखल जाए—

Scanned by CamScanner

बहुत जतन सँ कारू शिव सेवा। कामति प्रबल पिशाच परेत।
बूत बाड़ढ़कृत जोलप चास। उपगत अन्नकी भीखिकआस॥
गंगाजलसँ पाटल वेस, अपनहि बनु गृहस्थ संतेस।
हरब नोर सँ रचन बनाउ, बाकी दए फाके लए जाउ॥

कवीश्वर द्वारा रचित महेशवाणी एवं नचारी पद सभमे मिथिलाक आचार विचार, रीति नीति एवं सामाजिक व्यवस्थाक सहो नीक चित्रण भेल अछि। उदाहरणस्वरूप निम्न पाँति द्रष्टव्य अछि –

शिव करुणाकर निर्दय बन जन सासुर आएलजाए।
देखब भयम भरि अपनहि आङन भागपहि बैठी जमाए॥

एहि प्रकारक उक्ति कन्याक पिताक भए संकेत अछि। ई मिथिलेवासी पिताक हृदयक स्वर भए संकेत अछि।

कवीश्वरके उपर्युक्त भक्ति पद – चाहे महेशवाणी रहओ अथवा नचारी मिथिलांचल मे सर्वाधिक लोकप्रिय भेल। एखनो लोकक बीच हुनक सहज कतोक पद विद्यमान अछि –

चलु शिव कोबिराक चालि है डोपट ओढ़ भोला।
अछि भरि नगर-हकार है भल मानुस टोला॥

कवीश्वर चन्दा झा महाकाव्यकार छथि। एक गोट महाकाव्यकारक रूपमे कवीश्वर चन्दा झा रामायणक रचना कएने छथि – ओ रामायण अछि – मिथिलाभाषा रामायण। ई सात काण्ड मे विभक्त अछि। प्रत्येक काण्ड कतिपय अध्यायमे विभक्त अछि। एकर प्रयोग सम्भवतः कवीश्वर धार्मिक भावनासँ पाठकजनक भावना सँ कएने छथि। एहि रामायणक कथावस्तु मुख्य आधार अछि – आध्यात्म रामायण, वाल्मीकी रामायण तथा रामचरित मानस।

आधुनिक मैथिली साहित्यक गद्यकारकमे कवीश्वरक महत्वपूर्ण स्थान छन्हि। वस्तुतः आधुनिक कालमे मैथिली मे गद्य लेखनक परम्पराक सूत्रपात्र कवीश्वर चन्दा झा द्वार भेल। विद्यापति द्वारा रचित संस्कृत पोथी 'पुरुष परीक्षा'क मैथिली मे अनुवाद कए कवीश्वर पाठक जगत के मैथिलीक दिग्दर्शन करौने छथि। 1888 ई० मे कवीश्वरकई अनुवाद ग्रंथ बहराएल छल।

कवीश्वर चन्दा झा एक गोट पैघ अनुसंधानकर्ता छलाह। ई मिथिला मैथिलीक सम्बन्धमे अनेकानेक नवीन तथ्य सभक एकत्रीकरण कएने छलाह जकर उपयोग महामहोपाध्याय

परमेश्वर झा 'मिथिला तत्व विमर्श' नामक ग्रन्थ मे कएने छथि। कहल जाइत अछि जे नगेन्द्रनाथ गुप्त जखन विद्यापति सम्बन्धी अपन अन्वेषण प्रारम्भ कएलनि तँ ताहि मे कवीश्वर चन्दा झा पूर्ण सहयोग कएने रहथिन।

कवीश्वरक एक महान विशेषता छलनि जे ओ संगीतशास्त्रक महान ज्ञाता छलाह। एहि कारण अछि जे मिथिला भाषा रामायण मे ओ अनेकानेक रागक उल्लेख कएने छथि।

एहि प्रकारेँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे कवीश्वर चन्दा झा बहुमुखी प्रतिभाक छलाह। निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे ओ संस्कृतक महान पंडित देश-प्रेमी, समाजसुधारक, युगप्रवर्तक एवं मैथिली भाषा साहित्यक लोकप्रिय कवि छलाह।

Scanned by CamScanner